विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग-दशम् , विषय-हिन्दी .

दिनांक-. २३/६/२०.

अध्ययन-सामग्री .

सुप्रभात बच्चों , आज की कक्षा में हम आपके लिए सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना -.

अट नहीं रही है की पंक्तिदर व्याख्या एवं भावार्थ लेकर उपस्थित हैं -.

पठन-पाठन :.

कविता का मुख्य भाव : इस कविता को कवि सर्वव्यापक (चारो तरफ बिखरा हुआ ,सब में

मौजूद) संदर्भ में देखता है । कवि का मानना है कि अगर हमारा मन प्रसन्न है, हम प्रकृति प्रेमी है ; अगर प्रकृति के सौंदर्य को निहारने का नजरिया हममें है तो सिर्फ फागुन में ही नहीं बल्कि हर पल मन में वसंत का आगमन होता ।. प्रकृति में अपरिमित सौंदर्य बिखरा हुआ है ,उसे देखना सीख लें तो जीवन वसंतमय हो जाएगा ।.

व्याख्या:. अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है ।

कवि फागुन मास का मानवीकरण करते हुए कहते हैं- फागुन मास का सौंदर्य अपने चरम पर है ,चारो तरफ सौंदर्य की चमक से पूरी

सृष्टि दमक रही है और मेरा तन-मन वसंत को अपने अंदर समेटने चाह रहे हैं ,लेकिन उसे समेट कर अंदर भरने में असमर्थ हैं ।.

- ***गृहकार्य :***
- ***दी गई सामग्री को पढ़कर समझें ।***
- ***फागुन मास और वसंत के सबंध की चर्चा अपने शब्दों में करें ।***
- ***वसंत शब्द के किन्हीं तीन पर्यायवाची को लिखें ।***

सतर्क रहें , सुरक्षित रहें